(

Emotional development of child

(Infancy stage

भूमिका
(INTRODUCTION)

बालक के संवेगात्मक विकास और व्यवहार के आधार हैं—उसके संवेग। प्रेम, हर्ष और उत्सुकता के समान अभिनन्दनीय संवेग उसके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में योग देते हैं, जबकि भय, क्रोध और ईर्ष्या जैसे निन्दनीय संवेग उसके विकास को विकृत और कुण्ठित कर सकते हैं। इस प्रकार, जैसा कि **गेट्स व अन्य** ने लिखा है—**"बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलुओं के अनुरूप होता है और उनसे उसका अन्तःसम्बन्ध होता है।"**

"The development of emotional behaviour parallels and is interrelated with other aspects of a child's growth." —**Gates and Others** (p. 114)

संवेग, व्यक्ति को किसी कार्य को सीखने उसके सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास को प्रभावित करता है। संवेग, वास्तव में उपद्रव की अवस्था है। इसमें व्यक्ति सामान्य नहीं रहता। संवेग की परिभाषायें इस प्रकार हैं—

1. रॉस—"संवेग चेतना की वह अवस्था है जिसमें रागात्मक तत्व की प्रधानता रहती है।"

"Emotional state are those modes of consciousness in which the feeling element is predominent." —**Ross**

2. वैलेन्टीन—"जब रागात्मक प्रकृति का वेग बढ़ जाता है तभी संवेग की उत्पत्ति होती है।"

"When feelings become intense, we have emotions."

3. वुडवर्थ—"संवेग, व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।"

"Emotion is a moved or stirred-up state of the individual."

4. जरशील्ड—"किसी भी प्रकार के आवेश आने, भड़क उठने तथा उत्तेजित हो जाने की अवस्था को संवेग कहते हैं।

"The term emotion denotes a state of being moved, stirred up or aroused in same way." —**T. Jershield**

5. पी० टी० यंग—"संवेग मनोवैज्ञानिक कारकों से उत्पन्न सम्पूर्ण व्यक्ति के तीव्र उपद्रव की अवस्था है, जिसमें व्यवहार, चेतना, अनुभव और अभारावयव के कार्य सन्निहित रहते हैं।

"Emotion is an acute disturbance of the individual as a whole, psychological is origin, involving behaviour, conscious experience and visceral functioning."—**P. T. Young**

इन परिभाषाओं से संवेगों की इन विशेषताओं की अभिव्यक्ति होती है—

(i) संवेग की अवस्था में व्यक्ति सामान्य नहीं रहता, उत्तेजित होता है।

(ii) संवेग में अनुभूति चेतन होती है और शारीरिक परिवर्तन होते हैं।

(iii) संवेग मनोवैज्ञानिक परिस्थिति या उत्तेजक के कारण उत्पन्न होते हैं।

अतः स्पष्ट है—संवेग एक विशेष मानसिक दशा है जिसमें व्यक्ति की शारीरिक मानसिक दशा तथा व्यवहार में परिवर्तन होता है।

उक्त कथन के आधार पर हम कह सकते हैं कि विभिन्न अवस्थाओं में बालक का संवेगात्मक विकास और व्यवहार, शिक्षक के लिए विशेष अध्ययन का विषय है।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास
(EMOTIONAL DEVELOPMENT IN INFANCY)

स्पिट्ज (Spitz) (*Child Development*, p. 141) ने लिखा है—**"संवेग जन्म से ही विद्यमान नहीं रहते हैं। मानव-व्यक्तित्व के किसी भी अंग के समान उनका विकास होता है।"** **ब्रिजेज** (Bridges) के अनुसार, **"शिशु में जन्म के समय केवल उत्तेजना होती है और 2 वर्ष की आयु तक उसमें लगभग सभी संवेगों का विकास हो जाता है।"**

शिशु के संवेगात्मक विकास अर्थात् संवेगात्मक व्यवहार के विकास के सम्बन्ध में निम्न बातें उल्लेखनीय हैं—

1. शिशु अपने जन्म के समय से ही संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति करता है उसका रोना, चिल्लाना और हाथ-पैर पटकना इस बात का प्रमाण है।

2. शिशु के संवेगात्मक व्यवहार में अत्यधिक अस्थिरता होती है। उसका संवेग कुछ ही समय के लिए रहता है और फिर सहसा समाप्त हो जाता है; उदाहरणार्थ, रोता हुआ शिशु, खिलौना पाकर तुरन्त रोना बन्द करके हँसना आरम्भ कर देता है। जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसके संवेगात्मक व्यवहार में स्थिरता आती जाती है।

3. शिशु के संवेगों में आरम्भ में अत्यधिक तीव्रता होती है। धीरे-धीरे इस तीव्रता में कमी होती चली जाती है, उदाहरणार्थ, 2 या 3 माह का शिशु भूख लगने पर तब तक रोता है; जब तक उसको दूध नहीं मिल जाता है। 4 या 5 वर्ष का शिशु इस प्रकार का व्यवहार नहीं करता है।

4. शिशु के संवेगात्मक विकास में क्रमशः परिवर्तन होता चला जाता है; उदाहरणार्थ, शिशु आरम्भ में प्रसन्न होने पर मुस्कराता है। कुछ समय बाद वह अपनी प्रसन्नता को हँसकर, विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करके या बोलकर व्यक्त करता है।

5. शिशु के संवेगों में पहले अस्पष्टता होती है, पर धीरे-धीरे उसमें स्पष्टता आती जाती है; उदाहरणार्थ, जन्म के बाद प्रथम 3 सप्ताहों में उसकी चिल्लाहट से उसका संवेग स्पष्ट नहीं होता है। **गेसेल** (Gesell) ने अपने परीक्षणों के आधार पर बताया है कि 5 सप्ताह के शिशु की भूख, क्रोध और कष्ट की चिल्लाहटों में अन्तर हो जाता है और उसकी माँ उनका अर्थ समझने लगती है।

6. **जस्टिन** (Justin) के अनुसार—3 वर्ष की आयु से शिशु में अपने साथियों के प्रति प्रेम का विकास हो जाता है और वह उनके साथ खेलता एवं हँसता है।

7. **जोन्स** (Jones) के अनुसार—2 वर्ष का शिशु, साँप से नहीं डरता है, पर धीरे-धीरे उसमें भय का विकास होता चला जाता है। 3 वर्ष की आयु में वह अंधेरे में, पशुओं से और अकेले रहने से डरता है। 5 वर्ष की आयु तक वह अपने भय पर नियंत्रण नहीं कर पाता है।

8. **एलिस क्रो** (Alice Crow) (p. 60) के अनुसार—शिशु अपने साथियों और बड़े लोगों के संवेगात्मक व्यवहार का अनुकरण करता है। उसे उन्हीं बातों से भय लगता है, जिनसे उनको लगता

है। वह क्रोध का क्रोध से और प्रेम का प्रेम से उत्तर देता है। वह अपनी माता और अपने किसी प्रिय साथी के अतिरिक्त और किसी के प्रति सहानुभूति प्रकट नहीं करता है।

9. **स्किनर एवं हैरिमन** (Skinner and Harriman) (pp. 158-159) के अनुसार—**"शिशु का संवेगात्मक व्यवहार धीरे-धीरे अधिक निश्चित और स्पष्ट होता जाता है। उनके व्यवहार के विकास की सामान्य दिशा अनिश्चित और अस्पष्ट से विशिष्ट की ओर की होती है।"**